११६. मानव ही विवेक और विज्ञानपूर्वक जी सकता है, तभी परम्परा स्वस्थ हो सकता है

१६-१२-२०१३

इस वर्तमान तक, आज की तिथि तक सभी परम्पराएँ सामुदायिक हैं | सर्वमानव के साथ परम्परा बना ही नहीं | सर्वमानव के साथ कल्याणकारी कार्यक्रम से ही कल्याण हो सकता है | सर्वमानव परम्परा तभी बनेगा जब तक मानव जात, मानव जात एक है को समझा नहीं है, जिया नहीं है | मानव जात एक होने का आधार ६ भागों में बंटा है | आहार, विहार, व्यवहार, दूरगमन, दूरश्रवण, दूरदर्शन इन ६ भागों में बंटा है | इस क्रम में मानव को एक जात समझने के लिये मानव का शरीर रचना का आधार क्या है, इसको समझना होगा | इसको समझने पर पता लगता है, मानव जात का रचना शाकाहारी है | ये समझना आवश्यक है | यदि ये समझ में नहीं आता है, मानव जात एक होना समझ में नहीं आयेगा | इस क्रम में मानव अभी बहुत पीछे है | छोटा से छोटा मानव समुदाय, जातिवाद में फंसा है |

छोटे से छोटा का मतलब समुदाय | छोटे से छोटे समुदाय तक पहुंचा है जातिवाद | बड़े से बड़ा जात मानव जात ही है | हाथी से लेकर चींटी तक, मच्छर से लेकर बाघ तक जातियों का निर्माण हो चुका है | हर जात का अपने आचरण के आधार पर पहचान है | इसी क्रम में मानव जात भी अपने आचरण से पहचान होगी | मानव जात एक होने के लिये विकल्प को मध्यस्थ दर्शन प्रस्तुत करता है | उसके आधार पर मानव जाति का स्वरूप शाकाहारी होने के आधार पर पहचाना जा सकता है मानव जात एक होना | मानव जात शाकाहारी होने का आधार तीन स्वरूप में बताया है | आँतों का संरचना, नाखून, दाँत का संरचना, प्रवृत्ति का संरचना | शाकाहारी है कि माँसाहारी है, यही प्रवृत्ति का आधार है | मानव दोनों को लेकर चला है, मांसाहार, शाकाहार, जिससे मानव का जात छोटे से छोटा होते देखने को मिला |

सम्पूर्ण मानव को एक जात में देखने के लिये केवल आहार का गति ही प्रधान है | मानव का संरचना शाकाहारी है इस बात को विकल्प प्रस्तुत करता है | हम इस बात में सहमत हैं | मानव का एक जात होने से सोच विचार में अंतर होता ही है | मानव धर्म एक होने के रूप में ध्रुवीकरण होता है | मानव चाहे शाकाहारी हो या माँसाहारी हो, सुखी होना चाहता है | इसको भले प्रकार से सर्वेक्षण से पता लगाया है | चाहे शीतवलय में हो, चाहे समशीतोष्ण में हो, चाहे उष्ण वलय में हो तीनों स्थितियों में मानव जात अभी भी सुखी होना चाहता है | सुखी हो नहीं पा रहा है | हर दिन बदलता जाता है | सुखी होना तो बहुत दरकिनार रह गया | इस आधार पर हम कह सकते हैं मानव जात एक होना | मानव जाति एक, धर्म एक; एक जात होने के आधार पर अखण्ड समाज, एक धर्म होने के आधार पर सार्वभौम व्यवस्था- ये दोनों फलीभूत होते हैं | और विधियों से यह होता भी नहीं | जब तक मानव का अध्ययन पूरा नहीं हुआ, तब तक मानव जात एक होना सम्भव नहीं है |

मानव का अध्ययन, मानव धर्म, मानव जात इन दोनों भाग को अच्छी तरह से समझना होगा जिससे अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था दोनों फलीभूत होता है | इस क्रम में मानव अपने को स्वस्थ रहना पहचान पाता है | अभी तक इतिहास में मानव का अध्ययन नहीं है | प्रवृत्तियों का अध्ययन है | प्रवृत्तियां बिखरता गया, छोटे-छोटे समुदाय के रूप में मिला | छोटे से छोटे समुदाय को राजी करने के क्रम में सरकार काम किया, स्वस्थ रखने में भी काम किया है | सरकार अपने चिंतन को प्रस्तुत

नहीं कर पाया सार्वभौम रूप में | सार्वभौमता, अखण्डता का नारा हर समुदाय करता है जबकि समुदाय रूप में छोटा ही रहता है | अखण्डता कैसा होगा, सार्वभौमता कैसा होगा, यह प्रश्न बनता है | इसका उत्तर में विकल्प ही एकमात्र उपाय है | विकल्प विधि से मानव जात को अखण्ड समाज के रूप में पहचाना है | सार्वभौम रूप में व्यवस्था को पहचाना है- परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था के रूप में | इस आधार पर हम अच्छी तरह से स्वीकार सकते हैं कि इसको समझना चाहिए | समझने के क्रम में शिक्षा ही एकमात्र उपाय है | शिक्षा विधि से मानव जाति एक होना एवं मानव धर्म एक होना पहचान में आता है, विकल्प का अध्ययन से | इसे अच्छी तरह से पहचाना गया है तभी कहा जा रहा है | इसके लिये भी तीन संस्थाएं कटिबद्ध हैं जबकि वस्तु नहीं है | ग्लोबल हार्मनी नाम से संस्था है, उसके पास वस्तु नहीं है चाहत है |

दूसरा ग्लोबल सिटिजन, इनके पास भी वस्तु नहीं है | दोनों संस्थाएं हमारे पास आ चुकी हैं | अध्ययन कर रही हैं | तीसरा संस्था U.N.O. है; जिसके पास मशीनरी है | उक्त दोनों संस्थाओं में मशीनरी नहीं है अर्थात कार्यकर्ता नहीं हैं | कार्यकर्ताओं को तैयार करने के क्रम में हम जुड़े हैं | देखना है, समय कितना लगेगा | प्रयत्न तो जारी है | प्रयत्न में कमी नहीं रहेगी | बहुत सारे लोग जुड़ चुके हैं | विकल्प के प्रति जो जो पारंगत होता है, उनमें सर्वमानव कल्याण का भावना पैदा होता ही है | सर्वमानव कल्याण का विधि से ही ग्लोबल हार्मनी, ग्लोबल सिटिजन सार्थक होता है | सर्वमानव कल्याण, मानव जात एक, मानव धर्म एक होने को भले प्रकार से अध्ययन करना पड़ता है | यह विकल्प प्रस्तुत किया है | इसके बाद मानव जाति तरना भावी है | मानव जाति तरने के लिये दो ही मुद्दा है- मानव जात एक होना, मानव धर्म एक होना | यदि ये दोनों समझ में नहीं आता है तो मानव कल्याण सम्भव ही नहीं है | इसको भले प्रकार से सोचा है, समझा है |

इसे लोकव्यापीकरण करने के क्रम में हम काम कर रहे हैं | इसी क्रम में यह लेख लिखा जा रहा है | इन लेखों में मानव कल्याण का ही कार्यक्रम है | सभी लेख मानव कल्याण के अर्थ में ही है | वार्तालाप भी, संवाद भी मानव कल्याण के अर्थ में ही होता है | इसको हम सार्थक मानते हैं | ऐसा मानने वाले लोग हर दिन बढ़ रहे हैं | एक व्यक्ति से शुरुआत हुई | अभी हजारों व्यक्ति इस बात को समझ चुके हैं | यही गति है | हिन्दी जानने वाले प्रान्तों में इसकी अधिक स्वीकृतियां होती जा रही हैं | हिन्दी नहीं जानते हैं, वो अछूते रहते हैं | हिन्दी का असर में सर्वाधिक हो चुका है | अब से बाहर भी इसका असर होना शेष है | इसी क्रम में यह पूरा प्रस्तुति है | प्रस्तुति का उज्जवल भाग मानव जाति का कल्याण है | मानव जाति के कल्याण हेतु उक्त दोनों मुद्दों पर पारंगत होना पड़ेगा अर्थात मानव जात एक होने, मानव धर्म एक होने में |

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो |

- **ए. नागराज | प्रणेता एवं लेखक | मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) | दिव्य पथ संस्थान(भजनाश्रम) | अमरकंटक | जिला-अनूपपुर(म. प्र.)**